International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

युद्ध से परिवर्तित मतदान व्यवहार

आरती गुप्ता

पीएचडी स्कॉलर, राजनीति विभाग, महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड यूनिवर्सिटी, छतरपुर, (मध्य प्रदेश)

सारांश

युद्ध राजनीतिक सरेखणों को ध्रुवीकृत कर सकता है, जिससे मतदाता उस पार्टी के साथ अधिक मजबूती से जुड़ जाते हैं जो युद्ध के प्रति उनके दृष्टिकोण के साथ सरेखित होती है। इस शोध पत्र में इस बात पर ध्यानाकर्षित किया गया है, कि युद्ध के दौरान देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना में वृद्धि हो सकती है, जिससे उन पार्टियों का समर्थन बढ़ सकता है जो एक मजबूत रक्षा रुख का समर्थन करती हैं और सैन्य हस्तक्षेप पर जोर देती हैं।

- सर्जिकल स्ट्राइक जैसी सैन्य कार्रवाइयां सरकार के प्रति समर्थन बढ़ा सकती हैं या कम कर सकती हैं. हालांकि, युद्ध से मोहभंग उन पार्टियों के लिए समर्थन बढ़ा सकता है जो शांति, कूटनीति और सैन्य खर्च को कम करने की वकालत करती हैं।
- मूल्यों युद्ध मतदाताओं के विचारों और मूल्यों को बदल सकता है, जिससे उनकी राजनीतिक संबद्धता में बदलाव आ सकता है। आपके संपादक दस्तावेज़ में बताया गया है कि युद्ध के दौरान, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता के बारे में चिंताएँ कम महत्वपूर्ण हो सकती हैं क्योंकि सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाती है।
- युद्ध-विरोधी आंदोलनों और विरोधों का जनता की राय और राजनीतिक परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है. आपके संपादक दस्तावेज़ में कहा गया है कि युद्ध-विरोधी आंदोलनों में राजनीतिक भागीदारी और जुड़ाव को जुटाने की क्षमता है, जिससे मतदाता मतदान और राजनीतिक सक्रियता बढ़ सकती है।
- विशिष्ट संदर्भ का महत्व: मतदान व्यवहार पर युद्ध का प्रभाव समाज के विशिष्ट संदर्भ पर निर्भर करता है, जिसमें राजनीतिक प्रणाली, राजनीतिक संस्कृति और संघर्ष की प्रकृति शामिल है।

अन्ना गेटमैन्स्की और चगाई वीस के एक शोध (Getmansky & Weiss, 2022) में पाया गया कि युद्ध के बाद प्रधानमंत्री की लोकप्रियता में गिरावट आई और विपक्षी दल को समर्थन मिला. इस संदर्भ में, भारत पाक युद्ध एवं सर्जिकल स्ट्राइक के बाद भारत में मतदान व्यवहार में आए बदलावों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है।

मूलशब्द – मतदान व्यवहार, जनमत, सामाजिक आंदोलन, राजनीतिक ध्रुवीकरण, चुनावी नतीजे, सैनिक हस्तक्षेप, कूटनीति, नागरिक स्वतंत्रता, राष्ट्रीय एकता।

विषयसूची –

- **प्रस्तावना**
- **सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य**
- **युद्ध के प्रकार और मतदान व्यवहार पर उनका प्रभाव**
- **मतदान व्यवहार पर युद्ध का प्रभाव: अनुभवजन्य साक्ष्य**
- **युद्ध और मतदान व्यवहार के बीच संबंध को प्रभावित करने वाले कारक**

- **मीडिया कवरेज और सार्वजनिक राय**
- **राजनीतिक दल और विचारधारा**
- **निष्कर्ष**
- **संदर्भ सूची**

प्रस्तावना

युद्ध, मानव इतिहास में एक जटिल और विनाशकारी घटना है, जो न केवल भौतिक क्षति और मानवीय पीड़ा का कारण बनती है, बल्कि समाजों की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को भी गहरे रूप से प्रभावित करती है राजनीतिक प्रक्रियाएं, विशेष रूप से चुनावी व्यवहार, युद्ध के दौरान और बाद में महत्वपूर्ण बदलावों का अनुभव करती हैं, क्योंकि नागरिक अपने नेताओं, नीतियों और भविष्य के बारे में अपनी धारणाओं का पुनर्मूल्यांकन करते हैं। युद्ध के समय की भावनाएँ, जैसे देशभक्ति, भय और अनिश्चितता, मतदाताओं के निर्णयों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं, जिसके परिणामस्वरूप मौजूदा राजनीतिक परिप्रेक्ष में बदलाव और नए राजनीतिक आंदोलनों का उदय हो सकता है। युद्ध की परिस्थितियों में, मतदाता अक्सर सुरक्षा और स्थिरता को प्राथमिकता देते हैं, जिससे मजबूत नेतृत्व और रक्षात्मक नीतियों का समर्थन बढ़ सकता है।

इसके विपरीत, लंबे समय तक चलने वाले और महंगे युद्धों से मोहभंग और निराशा हो सकती है, जिससे सत्ता में बैठे लोगों के खिलाफ विरोध और वैकल्पिक राजनीतिक विचारधाराओं की उत्पत्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त, युद्ध के बाद की अवधि अक्सर सामाजिक और आर्थिक उथल-पुथल की विशेषता होती है, जो मतदाताओं के व्यवहार को और जटिल बना सकती है क्योंकि व्यक्ति नई वास्तविकताओं के अनुकूल होने और अपने राजनीतिक प्रतिनिधित्व की तलाश करने के लिए संघर्ष करते हैं।

युद्ध की परिस्थितियों में, राजनीतिक नेतृत्व मतदाताओं के व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें संकट के समय में निर्णायक कार्रवाई, प्रभावी संचार और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने की क्षमता शामिल है। मजबूत नेता, जो आत्मविश्वास और क्षमता का प्रदर्शन करते हैं, अपने घटकों के बीच विश्वास और समर्थन को प्रेरित कर सकते हैं, जिससे सत्तारूढ़ दल या नीतियों के लिए बढ़ती वफादारी हो सकती है। इसके विपरीत, अक्षम या अविश्वसनीय माने जाने वाले नेताओं को युद्ध के दौरान समर्थन में गिरावट का अनुभव हो सकता है, क्योंकि मतदाता नेतृत्व में बदलाव या वैकल्पिक राजनीतिक समाधानों की तलाश कर सकते हैं। इसी तरह, मीडिया सार्वजनिक राय को आकार देने और युद्ध के समय में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसमें घटनाओं को कैसे प्रस्तुत किया जाता है और किन आवाजों को सुना जाता है, मतदाता धारणाओं और दृष्टिकोणों को आकार दे सकता है। पक्षपाती या सनसनीखेज मीडिया कवरेज ध्रुवीकरण और विभाजन को बढ़ा सकता है, जबकि जिम्मेदार और उद्देश्यपूर्ण रिपोर्टिंग सूचित निर्णय लेने और सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा दे सकती है। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म राजनीतिक संवाद और लामबंदी के लिए नए रास्ते प्रदान करते हैं, जिससे मतदाता एक-दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं, जानकारी साझा कर सकते हैं और राजनीतिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य - मतदान व्यवहार पर युद्ध के प्रभाव को समझने के लिए कई सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का उपयोग किया जा सकता है। इनमें से, यथार्थवाद, उदारवाद, रचनात्मकता, मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय संबंधों के प्रमुख सिद्धांत हैं जो युद्ध और राजनीति के बीच संबंधों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

- यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य से, राज्य स्वार्थी अभिनेता हैं जो अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में अपनी शक्ति और सुरक्षा को अधिकतम करने की कोशिश करते हैं। यथार्थवादियों का तर्क है कि युद्ध शक्ति के लिए एक निरंतर संघर्ष है, और राज्य अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए बल का उपयोग करने के लिए तैयार रहेंगे। इस दृष्टिकोण से, युद्ध के दौरान मतदाता अपने नेताओं का समर्थन करने और अपने देश की सुरक्षा को प्राथमिकता देने की अधिक संभावना रखते हैं।
- उदारवादी परिप्रेक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, लोकतंत्र और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के महत्व पर जोर देता है। उदारवादियों का तर्क है कि युद्ध से बचा जा सकता है यदि राज्य एक-दूसरे के साथ सहयोग करने और अंतरराष्ट्रीय कानून और मानदंडों का पालन करने के लिए तैयार हों। इस दृष्टिकोण से, युद्ध के दौरान मतदाता शांतिपूर्ण समाधानों का समर्थन करने और अपने नेताओं को कूटनीति और बातचीत में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करने की अधिक संभावना रखते हैं।
- रचनावादी परिप्रेक्ष्य इस बात पर जोर देता है कि विचारों, मानदंडों और पहचानों का राज्य के व्यवहार पर कैसे प्रभाव पड़ता है। रचनावादियों का तर्क है कि युद्ध सामाजिक रूप से निर्मित है, और राज्य के हित और पहचान बदल सकते हैं। इस दृष्टिकोण से, युद्ध के दौरान मतदाता युद्ध के बारे में प्रचलित विचारों और मानदंडों से प्रभावित हो सकते हैं, जैसे कि देशभक्ति, राष्ट्रवाद और दुश्मन की छवि।
- मनोवैज्ञानिक सिद्धांत बताते हैं कि व्यक्ति कैसे जानकारी संसाधित करते हैं और निर्णय लेते हैं।
- समाजशास्त्रीय सिद्धांत सामाजिक समूहों, मानदंडों और संस्थानों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो व्यवहार को आकार देते हैं। उदाहरण के लिए, संज्ञानात्मक विसंगति का सिद्धांत बताता है कि जब लोग विरोधाभासी विश्वासों या व्यवहारों का अनुभव करते हैं तो वे तनाव को कम करने के लिए उन्हें संरेखित करने का प्रयास करते हैं। युद्ध के संदर्भ में, मतदाता युद्ध के बारे में नकारात्मक जानकारी को अनदेखा या त्याग सकते हैं ताकि अपने नेताओं और नीतियों में अपने विश्वास को बनाए रखा जा सके। सामाजिक पहचान का सिद्धांत बताता है कि लोग अपनी सामाजिक समूह सदस्यता के आधार पर अपनी पहचान बनाते हैं और अपने समूह के सदस्यों के प्रति पक्षपात दिखाते हैं। युद्ध के संदर्भ में, मतदाता अपने देश के प्रति अपनी पहचान को मजबूत कर सकते हैं और दुश्मन समूह के प्रति प्रतिकूलता का अनुभव कर सकते हैं, जिससे युद्ध प्रयासों का समर्थन बढ़ सकता है। कुल मिलाकर, मतदान व्यवहार पर युद्ध के प्रभाव को समझने के लिए कई सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का उपयोग किया जा सकता है, जिनमें से प्रत्येक राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है जो मतदाताओं के निर्णयों को आकार देते हैं।

युद्ध के प्रकार और मतदान व्यवहार पर उनका प्रभाव –

युद्ध के प्रकार का मतदान व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। अंतरराज्यीय युद्ध, जो राज्यों के बीच लड़े जाते हैं एवं आंतरिक युद्ध जो एक राज्य के भीतर विभिन्न गुटों के बीच लड़े जाते हैं, की तुलना में मतदान व्यवहार पर अलग-अलग प्रभाव डाल सकते हैं। । अंतरराज्यीय युद्ध राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ा सकते हैं और सरकार के प्रति समर्थन बढ़ा सकते हैं, जबकि आंतरिक युद्ध सामाजिक विभाजन को बढ़ा सकते हैं और राजनीतिक अस्थिरता को जन्म दे सकते हैं।

इसी तरह, असममित युद्ध, जिसमें असमान क्षमताओं वाले अभिनेताओं के बीच संघर्ष शामिल होते हैं, पारंपरिक युद्धों की तुलना में मतदान व्यवहार पर अलग-अलग प्रभाव डाल सकते हैं, जिसमें समान रूप से मेल खाने वाली ताकतों

के बीच संघर्ष शामिल होते हैं। असममित युद्ध नागरिक हताहतों की संख्या में वृद्धि और अनिश्चितता की भावनाओं को जन्म दे सकते हैं, जिससे सरकार के प्रति समर्थन में कमी और शांति के लिए बढ़ती मांग हो सकती है।
आधुनिक समय में, छद्म युद्धों की बढ़ती आवृत्ति को ध्यान में रखना आवश्यक है, जो तब होते हैं जब राज्य सीधे संघर्ष में शामिल हुए बिना प्रॉक्सी के माध्यम से एक-दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं। इन संघर्षों का प्रभाव अक्सर अस्पष्ट होता है, क्योंकि वे प्रत्यक्ष रूप से आबादी को प्रभावित नहीं कर सकते हैं, लेकिन फिर भी बाहरी हस्तक्षेप या राष्ट्रीय संप्रभुता के बारे में चिंताएं पैदा करते हुए मतदाताओं की राय को आकार दे सकते हैं।
इसके अतिरिक्त, युद्ध की अवधि भी मतदान व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। अल्पकालिक युद्धों में सरकार के प्रति समर्थन में तेजी आ सकती है, जबकि लंबे समय तक चलने वाले युद्ध मतदाता थकान, मोहभंग और युद्ध-विरोधी आंदोलनों को जन्म दे सकते हैं। संघर्ष में हताहतों की संख्या, आर्थिक लागत और अनिश्चितता जितनी अधिक होगी, मतदाताओं के सरकार का समर्थन करने और नीति में बदलाव की मांग करने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

- **प्रथम विश्व युद्ध के बाद बदलते पहलू** - प्रथम विश्व युद्ध के बाद के युग में संघर्ष की प्रकृति में एक चिह्नित बदलाव आया, जिसमें पारंपरिक अंतरराज्यीय युद्ध से लेकर विभिन्न प्रकार के गैर-राज्य अभिनेताओं, छद्म युद्धों और हाइब्रिड युद्धों से जुड़े अधिक विषम संघर्ष शामिल थे। इन परिवर्तनों ने दुनिया भर के मतदाताओं के व्यवहार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे जनता की राय, राजनीतिक लामबंदी और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है।
- **द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मतदान व्यवहार पर बदलते युग प्रभाव** - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के युग में मतदान व्यवहार पर बदलते युद्ध के प्रभाव को समझने के लिए कई कारक हैं। "शीत युद्ध" एक विचारधारात्मक और भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता थी जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ और उनके संबंधित सहयोगियों को खड़ा कर दिया, जिसका दुनिया भर के मतदान व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ा। परमाणु युद्ध के खतरे और कम्युनिस्ट विस्तार के डर ने कई देशों में डर और अनिश्चितता की भावनाओं को जन्म दिया, जिससे मजबूत राष्ट्रीय रक्षा और विरोधी नीतियों के लिए समर्थन बढ़ गया। शीत युद्ध ने प्रॉक्सी युद्धों और हथियारों की दौड़ को भी जन्म दिया, जिसने विकासशील देशों को अस्थिर कर दिया और राजनीतिक और सामाजिक विभाजन को बढ़ा दिया।
- **वियतनाम युद्ध के बाद मतदान व्यवहार पर प्रभाव** - वियतनाम युद्ध संयुक्त राज्य अमेरिका में राजनीतिक अशांति और विभाजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गया, जिसका युवा मतदाताओं पर विशेष रूप से गहरा प्रभाव पड़ा। इस संघर्ष के विरोध में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में विरोध प्रदर्शन फैल गए, जहां छात्रों ने इस युद्ध को अनैतिक और अन्यायपूर्ण करार दिया। युद्ध-विरोधी आंदोलन ने राजनीतिक सक्रियता की लहर को जन्म दिया, जिससे युवा मतदाताओं ने राजनीति में भाग लिया और शांति और सामाजिक न्याय के लिए वकालत की। वियतनाम युद्ध के कारण अमेरिका के मतदाता व्यवहार में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया, जिससे युद्ध में शामिल होने और विदेशी नीति के बारे में मोहभंग बढ़ गया। युद्ध के कारण विश्वास का संकट भी पैदा हो गया, क्योंकि सरकार की सूचना पर संदेह बढ़ता गया और पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग बढ़ी।
- **इराक युद्ध के बाद मतदान व्यवहार पर प्रभाव** - इराक युद्ध ने सार्वजनिक राय और मतदान व्यवहार को गहराई से ध्रुवीकृत किया, जिससे समर्थक और विरोधी शिविरों के बीच विभाजन बढ़ गया। युद्ध के समर्थकों ने तर्क दिया कि यह सद्दाम हुसैन के शासन को उखाड़ फेंकने, सामूहिक विनाश के हथियारों को नष्ट करने और इराक में लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। दूसरी ओर, आलोचकों ने युद्ध को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन, बिना किसी वास्तविक खतरे पर आधारित और क्षेत्र में अस्थिरता में योगदान करने के रूप में

देखा। युद्ध के बारे में इस तरह के विपरीत दृष्टिकोण से मतदाताओं के व्यवहार में एक मजबूत पार्टी और विचारधारात्मक संशय उत्पन्न हुआ।

- **भारत-पाकिस्तान युद्धों का भारत में मतदान व्यवहार पर** - भारत-पाकिस्तान युद्धों का भारत में मतदान व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जो अक्सर राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं और सत्तारूढ़ दल के प्रति समर्थन की भावनाओं को तीव्र करता है। इन संघर्षों ने युद्ध के समय की मानसिकता भी पैदा की है, जहां मतदाता राष्ट्रीय एकता और मजबूत नेतृत्व को प्राथमिकता देते हैं, जिससे चुनावों में सत्तारूढ़ दल को लाभ होता है। 1965 में, भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष का समापन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप पूरे देश में राष्ट्रवाद की वृद्धि हुई। सरकार ने "जय जवान, जय किसान" ("सैनिक की जय, किसान की जय") के नारे का इस्तेमाल किया, जिसका अर्थ है किसानों और सैनिकों दोनों के बीच देशभक्ति और समर्थन को बढ़ावा देना। सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी ने युद्ध के समय की भावनाओं का फायदा उठाया, जिससे चुनावों में महत्वपूर्ण लाभ हुआ।
- 1971 का युद्ध, जिसके परिणामस्वरूप बांग्लादेश का उदय हुआ, भारत के मतदान व्यवहार पर और भी अधिक गहरा प्रभाव पड़ा। इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने पाकिस्तान के खिलाफ निर्णायक जीत के लिए श्रेय का दावा किया, जिससे उनकी लोकप्रियता में भारी वृद्धि हुई। युद्ध ने इंदिरा गांधी की छवि को एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में स्थापित किया, जिससे चुनावों में कांग्रेस पार्टी की अविस्मरणीय जीत हुई।
- 1999 के कारगिल युद्ध ने भारत में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ाया, जिसके कारण चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को लाभ हुआ. युद्ध के दौरान, भाजपा के अटल बिहारी बाजपेयी ने एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में अपनी छवि पेश की, जिसने मतदाताओं को आकर्षित किया.
- भारत में सर्जिकल स्ट्राइक का मतदान व्यवहार पर जटिल प्रभाव रहा है. कुछ सर्वेक्षणों से पता चलता है कि बालाकोट हवाई हमले के बाद मोदी सरकार की लोकप्रियता में वृद्धि हुई (Modi's Popularity Back to Peak Levels after Air Strike, Survey Says, 2019; Team, 2019). मतदाताओं ने पाकिस्तान के प्रति सरकार की सख्त नीति का समर्थन किया (Modi Has Unprecedented Public Support on Pak Policy, 2017).

मतदान व्यवहार पर युद्ध का प्रभाव बहुआयामी है, जो संघर्ष की प्रकृति, अवधि और तीव्रता, साथ ही शामिल समाजों की राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों से प्रभावित है। युद्ध सरकार के प्रति समर्थन को बढ़ा सकता है, राजनीतिक और सामाजिक विभाजनों को बढ़ा सकता है या जनता की राय को मौलिक रूप से बदल सकता है, जिससे मतदाताओं का व्यवहार बदल सकता है। संघर्ष के विभिन्न रूपों की जटिल गतिशीलता और मतदान व्यवहार पर उनके प्रभावों को समझना लोकतांत्रिक समाजों के लिए सार्वजनिक राय को आकार देने और सूचित राजनीतिक विकल्प बनाने के लिए आवश्यक है।

युद्ध और मतदान व्यवहार के बीच संबंध को प्रभावित करने वाले कारक

- इस संबंध में विभिन्न कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिनमें युद्ध की प्रकृति, उसकी अवधि, युद्ध में राष्ट्र की भागीदारी का स्तर और जनता पर पड़ने वाले आर्थिक व सामाजिक प्रभाव शामिल हैं। युद्ध के परिणाम भी मतदान व्यवहार को गहराई से प्रभावित कर सकते हैं, विशेषकर जब वे नागरिकों की सुरक्षा और कल्याण पर सीधा असर डालते हैं(MacKinnon et al., 2006)।
- युद्ध से उत्पन्न होने वाली नैतिक दुविधाएँ और न्याय संबंधी अवधारणाएँ (जैसे कि धर्म और अधर्म का विचार, महाभारत में युधिष्ठिर के धर्म की सूक्ष्म प्रकृति का विकास) मतदाताओं के निर्णयों को जटिल बना सकती हैं (Sahgal, 2020)। युद्ध के दौरान राज्य द्वारा अपनाई गई नीतियाँ, विशेषकर संघर्ष समाधान और तटस्थता के

सिद्धांत (Anam, 2020), भी जनमत को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे चुनाव परिणामों पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकताहै।

- युद्ध के दौरान मीडिया की भूमिका, प्रचार और सूचना का प्रसार भी मतदाताओं की धारणाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण होते हैं, जो उनके मतदान व्यवहार को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। राजनीतिक नेतृत्व की विश्वसनीयता और युद्ध के प्रति उनकी प्रतिक्रिया भी मतदाताओं के निर्णयों को प्रभावित करने वाला एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है।
- युद्ध के मानवीय और सामाजिक परिणाम, जैसे कि विस्थापन, मानवाधिकार उल्लंघन, और सामाजिक विखंडन, भी मतदाताओं के भावनात्मक और तर्कसंगत विचारों को आकार देते हैं, जो उनके मतदान निर्णयों को प्रभावित करते हैं। युद्ध से उपजे आर्थिक प्रभाव, जैसे कि मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, और संसाधन आवंटन में बदलाव, सीधे तौर पर नागरिकों के जीवन स्तर को प्रभावित करते हैं, जिससे वे मौजूदा सरकार के प्रति अपने दृष्टिकोण को पुनर्मूल्यांकन करते हैं। युद्ध के कारण उत्पन्न होने वाली आर्थिक अस्थिरता अक्सर मतदाताओं को उन राजनेताओं की ओर धकेलती है जो आर्थिक सुधार और स्थिरता का वादा करते हैं, जिससे चुनाव परिणामों में महत्वपूर्ण बदलाव आ सकता है। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारक, जैसे कि सामूहिक आघात और राष्ट्रीय पहचान पर युद्ध का प्रभाव, भी मतदान व्यवहार में बदलाव ला सकते हैं, क्योंकि नागरिक सुरक्षा और सामाजिक सामंजस्य को प्राथमिकता देने लगते हैं (Rodríguez & Abualkibash, 2022)।
- युद्ध से उपजी अनिश्चितता और जोखिम की धारणाएँ मतदाताओं को अधिक रूढ़िवादी या सुरक्षा-उन्मुख उम्मीदवारों की ओर धकेल सकती हैं, जो स्थिर और सुरक्षित भविष्य का आश्वासन देते हैं। इस प्रकार, युद्ध एक बहुआयामी घटना है जो मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर मतदाताओं को प्रभावित करती है, जिससे उनके मतदान निर्णयों में जटिल परिवर्तन आते हैं।
- युद्ध के प्रभाव केवल तात्कालिक नहीं होते, बल्कि वे दीर्घकालिक सामाजिक और राजनीतिक प्रवृत्तियों को भी जन्म दे सकते हैं, जो पीढ़ियों तक चुनावी गतिशीलता को प्रभावित करते हैं (Bateson, 2016)।
- युद्ध की विभीषिकाएँ अक्सर नागरिकों को अपने नेतृत्व की क्षमताओं और निर्णयों पर अधिक गहनता से विचार करने के लिए मजबूर करती हैं, जिससे राजनीतिक जवाबदेही और पारदर्शिता की मांग बढ़ जाती है (Mwadulo & Odoyo, 2020)।

मीडिया कवरेज और सार्वजनिक राय

युद्ध की स्थिति में मीडिया का कवरेज जनता की राय को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह संघर्ष के बारे में जानकारी का प्राथमिक स्रोत होता है (Choiriyati, 2019)। सूचना के इस प्रवाह में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह या हेरफेर लोकतांत्रिक संवाद को विकृत कर सकता है और मतदाताओं की धारणाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है (Rodrigo-Ginés et al., 2023)।यह विशेष रूप से तब और भी स्पष्ट हो जाता है जब मीडिया विभिन्न हित समूहों, जैसे कि सरकारी संस्थाओं या सैन्य प्रतिष्ठानों, के हितों को प्रतिबिंबित करता है। इस तरह के कवरेज से जनता में युद्ध के प्रति समर्थन या विरोध की भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जो अंततः चुनावी परिणामों को प्रभावित करती हैं। इसके अलावा, मीडिया द्वारा प्रदान की जाने वाली आलोचनात्मक प्रतिक्रिया की मात्रा और गुणवत्ता भी सार्वजनिक धारणा को प्रभावित कर सकती है, खासकर जब यह संतुलित और प्रासंगिक हो (Fletcher, 1986)। यह सुनिश्चित करना कि जानकारी व्यापक और निष्पक्ष हो, मतदाताओं को सूचित निर्णय लेने में सहायता

करता है, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए आवश्यक है (Sulistiyani, 2022)। हालांकि, डिजिटल युग में, जहाँ सूचना का प्रवाह अत्यधिक होता है, वहाँ गलत सूचना और दुष्प्रचार का खतरा भी बढ़ जाता है, जिससे सार्वजनिक राय में भ्रम पैदा हो सकता है (Friedman, 2024)। सोशल मीडिया की भूमिका, विशेषकर ब्रेकिंग न्यूज़ के प्रसार और सार्वजनिक चर्चा में, मतदाताओं की धारणाओं को और भी जटिल बना देती है, क्योंकि यह पारंपरिक मीडिया की तुलना में तेजी से और व्यापक रूप से जानकारी फैलाता है (Hewett, 2013)।यह स्थिति मतदाताओं को सही और विश्वसनीय जानकारी के बीच अंतर करने की चुनौती देती है, जिससे उनके मतदान व्यवहार पर अनपेक्षित प्रभाव पड़ सकता है (Glenski et al., 2017)। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर बच्चों को लक्षित करने वाली भ्रामक विज्ञापन रणनीतियाँ और व्यक्तिगत डेटा पर आधारित प्रचार अभियान भी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित कर सकते हैं, विशेषकर जब वे उनके निर्णय लेने की क्षमता को विकृत करते हैं (Jang & Ko, 2023)। युद्धकालीन परिस्थितियों में, जब भावनात्मक और मानसिक दबाव अधिक होता है, तब ऐसे विज्ञापनों का प्रभाव और भी गहरा हो सकता है, जिससे मतदाताओं के तर्कसंगत निर्णय लेने की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। इन चुनौतियों के बावजूद, सूचना तक पहुँच और विभिन्न दृष्टिकोणों का आकलन करने की क्षमता मतदाताओं को अधिक सूचित और सोच-समझकर निर्णय लेने में सशक्त बनाती है (Opfermann et al., 2013)।

राजनीतिक दल और विचारधारा

युद्ध और मतदान व्यवहार के संदर्भ में, राजनीतिक दलों की विचारधाराएँ मतदाताओं की प्राथमिकताओं और निर्णयों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन विचारधाराओं में युद्ध के प्रति उनके दृष्टिकोण, राष्ट्रीय सुरक्षा नीतियाँ और अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर उनके विचार शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ दल सैन्य हस्तक्षेप का समर्थन कर सकते हैं, जबकि अन्य कूटनीतिक समाधान या तटस्थता की वकालत कर सकते हैं, और इन भिन्नताओं से मतदाता उनके प्रति अपनी पसंद निर्धारित करते हैं (Shaikh, 2020)। युद्ध के समय, दल अपने घोषणापत्रों और सार्वजनिक बयानों के माध्यम से मतदाताओं को यह समझाने का प्रयास करते हैं कि उनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय हितों के लिए सबसे उपयुक्त है, जो चुनावी परिणामों पर सीधा प्रभाव डाल सकता है।इसके अतिरिक्त, मतदाताओं की आलोचनात्मक सोच क्षमताओं का विकास (Benedicto & Andrade, 2022) (Tathahira, 2020) और सामाजिक बोध **(Efthimiadou, 2021)** उन्हें विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा प्रस्तुत किए गए युद्ध संबंधी तर्कों का विश्लेषण करने में सहायता करता है, जिससे वे अधिक सुविज्ञ निर्णय ले पाते हैं। कृषि उत्पादन पर मौसम की जानकारी का प्रभाव (CHATTOPADHYAY et al., 2018) भी परोक्ष रूप से मतदाताओं के निर्णय को प्रभावित कर सकता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ युद्ध या संघर्ष ने कृषि गतिविधियोंको बाधित किया है। ऐसे में मतदाता उन राजनीतिक दलों की ओर रुख कर सकते हैं जो खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता के मुद्दे पर ठोस समाधान प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके मतदान व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन आ सकते हैं।इसके अलावा, राजनीतिक दल अक्सर युद्ध के दौरान राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावना को भुनाने का प्रयास करते हैं, जिससे मतदाताओं में भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न हो सकती हैं और वे उन्हीं दलों के प्रति अधिक झुकाव महसूस कर सकते हैं जो इन भावनाओं को प्रभावी ढंग से व्यक्त करते हैं। यह स्थिति विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण हो जाती है जब दल युद्ध के परिणामों को अपनी नीतियों की सफलता या विफलता से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं, जिससे मतदाताओं के निर्णय सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं।युद्ध की नैतिक और मानवीय लागतों पर राजनीतिक दलों की स्थिति भी मतदाताओं के निर्णयों को अत्यधिक प्रभावित करती है, विशेषकर जब वे मानवाधिकारों और अंतरराष्ट्रीय कानून के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार, युद्ध के दौरान राजनीतिक दलों की भूमिका केवल नीतियों को प्रस्तावित

करने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें राष्ट्रीय आख्यान को आकार देना और मतदाताओं की नैतिक धारणाओं को निर्देशित करना भी शामिल होता है।युद्ध के दौरान उत्पन्न होने वाली आर्थिक चुनौतियाँ, जैसे कि मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, भी मतदाताओं को उन दलों की ओर मोड़ सकती हैं जो इन समस्याओं के समाधान के लिए ठोस आर्थिक योजनाएँ प्रस्तुत करते हैं। युद्ध के कारण सामाजिक तनाव और विभाजन भी बढ़ सकते हैं, जिससे राजनीतिक दल इन विभाजनों को दूर करने या उनका फायदा उठाने का प्रयास करते हैं, जो मतदान पैटर्न को प्रभावित करता है।विभिन्न समूहों और समुदायों के बीच मतभेदों को प्रबंधित करने में राजनीतिक दलों की क्षमता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह सामाजिक सामंजस्य और नागरिक भागीदारी को सीधे तौर पर प्रभावित करती है। यह क्षमता, बदले में, युद्ध के बाद की पुनर्निर्माण प्रक्रिया और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण होती है, जिससे मतदाताओं का भविष्य का समर्थन भी प्रभावित होता है (Teece et al., 2016)।

निष्कर्ष

युद्ध के बाद की पुनर्प्राप्ति में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी और अनुकूलन क्षमता पर कैसे प्रभाव पड़ सकता है। युद्ध-प्रभावित समाजों में, इस प्रकार की लचीलापन विकसित करना न केवल व्यक्तिगत स्तर पर महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सामूहिक उत्थान और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। यह विशेष रूप से तब और महत्वपूर्ण हो जाता है जब संगठन व्यक्तिगत चपलता को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, क्योंकि यह कर्मचारियों को बदलते परिवेश में प्रभावी ढंग से अनुकूलन करने और प्रदर्शन में सुधार करने में सक्षम बनाता है (Zhang et al., 2018) (Schnellbächer & Heidenreich, 2020)। व्यक्तिगत चपलता तनाव प्रबंधन और विश्वास निर्माण जैसे कारकों से भी प्रभावित होती है, जो सामूहिक रूप से उच्च प्रदर्शन में योगदान करते हैं। यह अनुकूलनशीलता और उच्च प्रदर्शन की अवधारणाएँ युद्ध और मतदान व्यवहार के अध्ययन में भी लागू होती हैं, जहाँ मतदाता और राजनीतिक दल दोनों ही बदलती परिस्थितियों के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं और रणनीतियों को अनुकूलित करते हैं। इस संदर्भ में, व्यक्तियों की दबाव में प्रदर्शन करने की क्षमता भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि कुछ व्यक्ति उच्च दबाव वाली स्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं जबकि अन्य असफल हो सकते हैं, जैसा कि निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में देखा गया है (Sosnowski & Brosnan, 2023)।इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ पुनर्निर्माण और विकास के प्रयासों को भी प्रभावित करती हैं, जहाँ व्यक्तिगत लचीलापन और सामूहिक सहयोग शांति-निर्माण और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण होते हैं (Harris, 1994) (Liebermann et al., 2002)। विभिन्न संदर्भों में, जैसे कि खेल प्रदर्शन में, प्रतिक्रिया तंत्रों को समझना और उनका उपयोग करना महत्वपूर्ण है ताकि व्यक्तियों को उनके लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शन किया जा सके और वांछित परिणामों को प्राप्त करने में मदद मिल सके, जो युद्ध के बाद के समाजों मेंलागू होते हैं जहां सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए सकारात्मक प्रोत्साहन और सामुदायिक भागीदारी आवश्यक है (Malekzadeh, 2018)। इसी प्रकार, व्यक्तिगत अनुशासन और आत्म-नियंत्रण, जो व्यवस्थित व्यवहार और नियम पालन से जुड़े हैं, युद्ध के बाद के समाजों में व्यवस्था बहाल करने और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं (Syahid & Hikmah, 2019)।इसके अतिरिक्त, नेतृत्व और प्रबंधन की भूमिका कर्मचारियों को संगठनात्मक उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने के लिए प्रेरित करके प्रभावी प्रदर्शन प्रबंधन को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है (Ullah, 2020)। यह सिद्धांत युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण में भी लागू होता है, जहाँ प्रभावी नेतृत्व सामाजिक सामंजस्य और आर्थिक पुनरुत्थान को बढ़ावा देने में सहायक होता है।यह नेतृत्व तब और भी प्रभावी होता है जब वह कर्मचारियों की अपेक्षाओं के अनुरूप संतुलित पुरस्कारों का प्रावधान करता है, जिससे प्रेरणा और प्रदर्शन में वृद्धि होती है (Suratman & Syahputro, 2020)। इसके अतिरिक्त, संघर्ष और बातचीत के सिद्धांतों को समझना भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये संगठन के भीतर विभिन्न

व्यवहारों की पहचान करने और बाधाओं को दूर करने में सहायक होते हैं (Alexandrov, 2004)।यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब प्रभावी ढंग से बातचीत करने की क्षमता, तैयारी और सूचना संग्रह पर निर्भर करती है, जिससे प्रत्येक पक्ष की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और एक साझा समाधान तक पहुंचा जा सके (Weiss, 2016)। इसके अलावा, व्यक्तियों के आत्म-नियमन के तरीके भी उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता को प्रभावित करते हैं, जिससे अधिग्रहण-धारण की द्विदिशता के माध्यम से प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है (Vieira et al., 2019)।

व्यक्तिगत और संगठनात्मक प्रदर्शन के बीच संबंध, विशेष रूप से जब कार्यकुशलता और प्रभावशीलता के संदर्भ में देखा जाता है, यह दर्शाता है कि सफल परिणाम केवल बाह्य प्रोत्साहनों से नहीं, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक मूल्यों और प्रेरणाओं से भी निर्धारित होते हैं (Tenneti & Tenneti, 2022)। आंतरिक प्रेरणा विशेष रूप से युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण और विकास प्रयासों में महत्वपूर्ण होती है, जहाँ सामुदायिक भागीदारी और स्वैच्छिक योगदान सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक होते है।

संदर्भ सूची

1. Alexandrov, A. V. (2004). How to Write a Research Paper [Review of How to Write a Research Paper]. Cerebrovascular Diseases, 18(2), 135. Karger Publishers. https://doi.org/10.1159/000079266
2. Anam, S. (2020). NEUTRALITY IN CONFLICT MEDIATION PROCESS. Dauliyah Journal of Islamic and International Affairs, 5(2), 291. https://doi.org/10.21111/dauliyah.v5i2.4649
3. Bateson, P. (2016). Robustness and plasticity in development [Review of Robustness and plasticity in development]. Wiley Interdisciplinary Reviews Cognitive Science, 8. Wiley. https://doi.org/10.1002/wcs.1386
4. Benedicto, P. N., & Andrade, R. (2022). Problem-Based Learning Strategies and Critical Thinking Skills Among Pre-Service Teachers. International Journal of Science Technology Engineering and Mathematics, 2(2), 1. https://doi.org/10.53378/352885
5. CHATTOPADHYAY, N., Rao, K. V., Sahai, A. K., Balasubramanian, R., Pai, D. S., Pattanaik, D. R., CHANDRAS, S. V., & KHEDIKAR, S. (2018). Usability of extended range and seasonal weather forecast in Indian agriculture. MAUSAM, 69(1), 29. https://doi.org/10.54302/mausam.v69i1.218
6. Choiriyati, S. (2019). PERAN MEDIA MASSA DALAM MEMBENTUK OPINI PUBLIK. Perspektif. http://journal.uml.ac.id/PF/article/download/143/126
7. Efthimiadou, E. (2021). Hot and Cold Cognition in Hybrid Communication. Frontiers in Education Technology, 4(3). https://doi.org/10.22158/fet.v4n3p1
8. Fallahi, V., Mikaeli, N., Atadokht, A., & Ahmadi, S. (2019). The role of self-regulation and alienation in Predict educational achievement motivation of students. Shenakht Journal of Psychology and Psychiatry, 6(5), 72. https://doi.org/10.29252/shenakht.6.5.72
9. Fletcher, C. (1986). The Effects of Performance Review in Appraisal: Evidence and Implications. Journal of Management Development, 5(3), 3. https://doi.org/10.1108/eb051611

10. Friedman, H. H. (2024). Critical Thinking, Cognitive Distortions, and Logical Reasoning: A Guide for Those Who Want to Empower Their Minds. SSRN Electronic Journal. https://doi.org/10.2139/ssrn.4680652
11. Glenski, M., Pennycuff, C., & Weninger, T. (2017). Consumers and Curators: Browsing and Voting Patterns on Reddit. arXiv (Cornell University). https://doi.org/10.48550/arxiv.1703.05267
12. Glöckner, A., Towfigh, E. V., & Traxler, C. (2013). Development of legal expertise. Instructional Science, 41(6), 989. https://doi.org/10.1007/s11251-013-9266-5
13. Harris, D. H. (1994). Organizational Linkages: Understanding the Productivity Paradox,. https://doi.org/10.21236/ada288518
14. Hewett, J. (2013). Using Twitter to integrate practice and learning in journalism education: Could social media help to meet the twin challenge of both dimensions? Journal of Applied Journalism & Media Studies, 2(2), 333. https://doi.org/10.1386/ajms.2.2.333_1
15. Jang, Y., & Ko, B. (2023). Online Safety for Children and Youth under the 4Cs Framework—A Focus on Digital Policies in Australia, Canada, and the UK. Children, 10(8), 1415. https://doi.org/10.3390/children10081415
16. Liebermann, D. G., Katz, L., Hughes, M., Bartlett, R., McClements, J. D., & Franks, I. M. (2002). Advances in the application of information technology to sport performance [Review of Advances in the application of information technology to sport performance]. Journal of Sports Sciences, 20(10), 755. Taylor & Francis. https://doi.org/10.1080/026404102320675611
17. MacKinnon, D. P., Fairchild, A. J., & Fritz, M. S. (2006). Mediation Analysis. Annual Review of Psychology, 58(1), 593. https://doi.org/10.1146/annurev.psych.58.110405.085542
18. Malekzadeh, S. (2018). Fuzzy Controller of Reward of Reinforcement Learning For Handwritten Digit Recognition. arXiv (Cornell University). https://doi.org/10.48550/arxiv.1812.07028
19. Mwadulo, M. W., & Odoyo, C. O. (2020). Phenomenology Approach Applicability in Information Systems and Technology Field. Computer Science and Information Technology, 8(2), 37. https://doi.org/10.13189/csit.2020.080201
20. Opfermann, M., Scheiter, K., Gerjets, P., & Schmeck, A. (2013). Hypermedia and Self-Regulation: An Interplay in Both Directions. In Springer international handbooks of education (p. 129). Springer Nature (Netherlands). https://doi.org/10.1007/978-1-4419-5546-3_9
21. Raizada, R. D. S., & Kishiyama, M. M. (2010). Effects of socioeconomic status on brain development, and how cognitive neuroscience may contribute to leveling the playing field. Frontiers in Human Neuroscience. https://doi.org/10.3389/neuro.09.003.2010
22. Rodrigo-Ginés, F.-J., Carrillo-de-Albornoz, J., & Plaza, L. (2023). A systematic review on media bias detection: What is media bias, how it is expressed, and how to detect it [Review of A systematic review on media bias detection: What is media bias, how it is expressed, and how to detect it]. Expert Systems with Applications, 237, 121641. Elsevier BV. https://doi.org/10.1016/j.eswa.2023.121641

23. Rodríguez, M. J. L., & Abualkibash, S. K. (2022). Basic Psychological Needs Satisfaction: A Way to Enhance Resilience in Traumatic Situations. International Journal of Environmental Research and Public Health, 19(11), 6649. https://doi.org/10.3390/ijerph19116649
24. Sahgal, S. (2020). Evolving Dharma Consciousness of Dharmaputra Yudhishthira within the Mahabharata. Advances in Social Sciences Research Journal, 7(12), 14. https://doi.org/10.14738/assrj.712.9444
25. Schnellbächer, B., & Heidenreich, S. (2020). The role of individual ambidexterity for organizational performance: examining effects of ambidextrous knowledge seeking and offering. The Journal of Technology Transfer, 45(5), 1535. https://doi.org/10.1007/s10961-020-09781-x
26. Shaikh, S. E. (2020). Interactive and revisable decision-support: doing more harm than good? Behaviour and Information Technology, 41(4), 845. https://doi.org/10.1080/0144929x.2020.1837242
27. Sosnowski, M. J., & Brosnan, S. F. (2023). Under pressure: the interaction between high-stakes contexts and individual differences in decision-making in humans and non-human species [Review of Under pressure: the interaction between high-stakes contexts and individual differences in decision-making in humans and non-human species]. Animal Cognition, 26(4), 1103. Springer Science+Business Media. https://doi.org/10.1007/s10071-023-01768-z
28. Sulistiyani, E. (2022). Perceived Organizational Support and Performance: The Mediating Effect of Affective Values. Jurnal Manajemen Bisnis, 13(1), 61. https://doi.org/10.18196/mb.v13i1.13555
29. Suratman, A., & Syahputro, S. B. (2020). The Investigation of Motivation's Role as Mediator Effects on Employees' Performance. https://doi.org/10.2991/aebmr.k.200812.006
30. Syahid, N., & Hikmah, M. N. (2019). The Influence of Regulation Implementation on The Intensity of Discipline for Sixth Grade of Kulliyatul Muallimin Islamiyah at Darussalam Gontor Modern Islamic Institution. Deleted Journal, 14(1), 105. https://doi.org/10.21111/at-tadib.v14i1.3275
31. Tathahira, T. (2020). PROMOTING STUDENTS' CRITICAL THINKING THROUGH ONLINE LEARNING IN HIGHER EDUCATION: Challenges and Strategies. Englisia Journal of Language Education and Humanities, 8(1), 79. https://doi.org/10.22373/ej.v8i1.6636
32. Teece, D. J., Peteraf, M. A., & Leih, S. (2016). Dynamic Capabilities and Organizational Agility: Risk, Uncertainty, and Strategy in the Innovation Economy. California Management Review, 58(4), 13. https://doi.org/10.1525/cmr.2016.58.4.13
33. Tenneti, V. J., & Tenneti, M. (2022). Karma Yoga: The Science of Human Excellence. Deleted Journal, 21(2), 9. https://doi.org/10.57198/2583-4932.1043
34. Ullah, I. (2020). An Investigating on Influential Attributes in determining the Employees' Performance. Pakistan Social Sciences Review, 4, 828. https://doi.org/10.35484/pssr.2020(4-ii)67
35. Vieira, V. A., Silva, V. da, Boles, J. S., Marioti, B. R., & Pereira, R. C. (2019). The role of self-regulatory mode on acquisition–retention ambidexterity. Journal of Business and Industrial Marketing, 34(8), 1813. https://doi.org/10.1108/jbim-03-2018-0114

36. Wang, L. (2021). The Role of Students' Self-Regulated Learning, Grit, and Resilience in Second Language Learning [Review of The Role of Students' Self-Regulated Learning, Grit, and Resilience in Second Language Learning]. Frontiers in Psychology, 12. Frontiers Media. https://doi.org/10.3389/fpsyg.2021.800488
37. Weiss, A. C. (2016). Negotiation: How to Be Effective [Review of Negotiation: How to Be Effective]. The Journal Of Hand Surgery, 42(1), 53. Elsevier BV. https://doi.org/10.1016/j.jhsa.2016.10.009
38. Zhang, Y., Wei, F., & Horne, C. V. (2018). INDIVIDUAL AMBIDEXTERITY AND ANTECEDENTS IN A CHANGING CONTEXT. International Journal of Innovation Management, 23(3), 1950021. https://doi.org/10.1142/s136391961950021x